विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग -दशम्

विषय -हिंदी

।।अध्ययन सामग्री ।।

क्षितिज (भाग-२)

।। सूरदास के पद ।।

निर्देश -दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें समझे वह अपनी कॉपी में लिख कर रखें ।

प्रश्नोत्तर -:

सूरदास के पद का पद का प्रश्न उत्तर

-1: गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर- गोपियों द्वारा उधव को भाग्यवान कहने में निहित व्यंग्य यह है कि वे उधव को बड़भागी कहकर उन्हें अभाग्यशाली होने की ओर संकेत करती हैं। वे कहना चाहती हैं कि उधव तुम श्रीकृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रेम से वंचित हो और इतनी निकटता के बाद भी तुम्हारे मन में श्रीकृष्ण के प्रति अनुराग नहीं पैदा हो सका। ऐसा तो तुम जैसे भाग्यवान के ही हो सकता है जो इतना निष्ठुर और पाषाण हृदय होगा अर्थात गोपियां कहना चाहती हैं कि उधव तुम जैसा अभागा शायद ही दूसरा कोई हो।

प्रश्न-2: उधव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर-: उधव के व्यवहार की तुलना दो वस्तुओं से की गई –

> कमल के पत्ते से जो पानी में रहकर भी गीला नहीं होता है।

> पानी में डूबी गागर से जो तेल के कारण पानी से गीली नहीं होती है।

प्रश्न-3: गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उधव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर-: गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उधव को उलाहने दिए |

› उधव तुमने प्रीति नदी में कभी पैर नहीं डुबोया |

› तुम कृष्ण के समीप रहकर भी उनके प्रेम से वंचित रह गए।

› योग संदेश हम जैसों के लिए कड़वी ककड़ी के समान है।

प्रश्न-4: उधव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह आग में घी का काम कैसे किया?

उत्तर-: श्री कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियां पहले से विरहाग्नि में जल रही थी। वे श्री कृष्ण के प्रेम संदेश और उनके आने की प्रतीक्षा कर रही थी। ऐसे में श्रीकृष्ण ने उन्हें योग साधना का संदेश भेज दिया जिससे उनकी व्यथा कम होने के वजाय और भी बढ़ गई इस तरह उधव द्वारा दिए गए योग के संदेशों ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम किया।

प्रश्न-5 -:'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन सी मर्यादा ना रहने की बात की जा रही है?

उत्तर-: गोपियां श्री कृष्ण से प्रेम करती थी। वे श्रीकृष्ण से भी अपने प्रेम के बदले प्रेम का प्रतिदान चाहती थी । प्रेम के बदले प्रेम का आदान-प्रदान ही मर्यादा है, किंतु श्रीकृष्ण ने प्रेम संदेश के स्थान पर योग संदेश भेजकर मर्यादा का निर्वाह नहीं किया । इसके विपरीत गोपियों ने श्री कृष्ण का प्रेम पाने के लिए सारी मर्यादाओं को एक किनारे रख दिया था ।

प्रश्न-5 -:'मरजादा न लहौं' के माध्यम से कौन सी मर्यादा ना रहने की बात की जा रही है?

उत्तर-: गोपियां श्री कृष्ण से प्रेम करती थी। वे श्रीकृष्ण से भी अपने प्रेम के बदले प्रेम का प्रतिदान चाहती थी । प्रेम के बदले प्रेम का आदान-प्रदान ही मर्यादा है, किंतु श्रीकृष्ण ने प्रेम संदेश के स्थान पर योग संदेश भेजकर मर्यादा का निर्वाह नहीं किया । इसके विपरीत गोपियों ने श्री कृष्ण का प्रेम पाने के लिए सारी मर्यादाओं को एक किनारे रख दिया था ।

प्रश्न-6: कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर-: गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने अनन्य भक्ति की अभिव्यक्ति निम्नलिखित रूपों में करती –

- वे अपनी स्थिति गुड़ से चिपटी चीटियों जैसी पाती है जो किसी भी दशा में कृष्ण प्रेम से दूर नहीं रह सकती हैं।
- श्री कृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान मानती हैं।
- वे श्री कृष्ण के प्रति मन कर्म और वचन से समर्पित हैं।
- वे सोते जागते दिन-रात कृष्ण का जाप करती हैं।

प्रश्न-7: गोपियों ने उधव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उत्तर-: गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने के लिए कही है जिनका मन चक्र के समान अस्थिर रहता है तथा एक जगह न टिक कर इधर-उधर भटकता रहता है।